International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 828-830

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2016; 2(3): 828-830
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2016
Accepted: 17-09-2016

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Department of AI & As, Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Department of AI & As, Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

दलितों के उत्थान में बौद्ध धर्म की साथकर्ता

Dr. Sunita Kumari

प्रस्तावनाः

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में तथागत सम्यक् सम्बुद्ध का आविर्भाव हुआ था। उनका जन्म नेपाल की तराई में (लुम्बनि जंगल) कपिलवस्तु नामक ग्राम में हुआ था। उनकी माता का नाम ''मकामाया देवी तथा पिता का नाम सुदोद्धन थां उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ एवं गौतम था। ज्ञान–प्राप्ति के बाद उनका नाम 'गौतम बुद्ध' हो गया।

उनके आविर्भाव के समय में पूरे विश्व की उथल–पुथल की स्थिति बनी हुई थी। चारो तरफ अराजकता अनाचार, अत्याचार, दुराचार का बोलबाला था। हिन्दु समाज अनेक धार्मिक कर्मकाण्डों, रूढ़ियों एवं अन्धविश्विासों में जकड़ा हुआ था। अमीर लोग गरीबों, दलितों निम्न वर्गो को सता रहे थे, दोहन कर रहे थे। तमाम लोग जातियों, उपजातियो के रूप में बंटेए थे। ब्राह्मण दलितो को आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग–नरक, पाप–पुण्ड, देवी–देवता आदि के नाम पर भ्रमित कर रहे थे ईश्वर को बखान कर रहे थे। उन्हें भूत–प्रेत, डायन–ओच का भय दिखाया जा रहा था और यज्ञ का महत्व बताया जा रहा था। यज्ञ में भेड़ बकरियों घोड़े इत्यादि जीवो की बलि दी जा रही थी। बलि–प्रथा जोरो पर थी। ब्राहाणो द्वारा यह बताया जा रहा था कि बिना जीवों के बलि के कोई यज्ञ सफल हो ही नही सकता है।

इतना ही नही जाति–प्रथा जोरो पर थी। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों पर अत्याचार कर रहे थे। शोषण कर रहे थे। समाजिक विषमता चारो तरफ कायम थी। निम्न जाति के लोग (दलित) दबाये–कुचले जा रहे थे। शोषण–दोहन निरन्तर जारी था। ऐसे विषमतापूर्ण समाज को देखकर भगवान बुद्ध से रहा नही गया क्योंकि वे उच्च कोटि के संत तथा महात्मा थे। साथ ही साथ युगद्रष्टा, भविष्य द्रष्टा एवं समय पारखी भी थी। समय एवं स्थिति को वे भाँप गये। वे सामाजिक विषता को एवं ऊँच–नीच के भेद को सदा के लिए समाप्त कर देने का निर्णय ले लिया तथा कहा कि जब तक समाज की समानता नही आयेगी, भाईचारा नही आयेगा, बराबरी नही आएगी, आडम्बर, अन्धविश्वास, मूर्ति–पूजा, बलि–प्रथा, दलितें का शोषण–दोहन का खात्म नही होगा, तब तक मैं शान्त नही रहूँगा। न कोई बड़ा होगा न कोई छोटा होगा, न कोई नीच होगा, न कोई ऊँच। न कोई किसी का शोषण करेगा, न दोहन करेगा। जाति–प्रथा को जड़ से समाप्त करूँगा। भगवान बुद्ध 'बसल सुत्त' में स्पष्ट रूप में कहा है :–

> ''न जच्चा बसलो होति, न उच्चा होति ब्राह्माणों।
> कम्मुना बसलो हाति, कमुना होति ब्राहह्मणों।।''

अर्थात् जन्म से कोई नहीं नही होता न जन्म से कोई ब्राह्मण होता है। कर्म से कोई नींच होता है। कर्म से कोई ब्राह्मण होता है। अर्थात यहा पर इस गाथा को माध्यम से तथागत सम्यक सम्बुद्ध का कहना है कि गुण के आधारपर नीच एवं ब्राह्मण समझना चाहिए न कि जन्म के आधार पर।

भगवान बुद्ध नास्तिक थे। वे ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे। देवी–देवताओं में विश्वास नही करते थे। बाह्य आडम्बर के भी विरोधी थे। वह कहते थे कि यह सब बकवास, ढोंग एवं अन्धविश्वास है अथवा रूढ़िवादिता है। राजगृह पर्वत पर वे पाँच वर्षो तक तपस्या में रत रहे थे, लेकिन कही कोई भूत–पिशाच दिखायी नही दिया, श्मशान घाट पर अंधेरी रात्रि में अकेले रहकर देखा, वहाँ भी कोई भूत–पिशाच दिखायी नहीं पड़ा। देवी–देवताओं के पूजा के भी वे सख्त विरोधी थी।

वे मानवतावादी विचारधारा के पक्षधर थे। उनका कहना था कि मानव एक जाति है। जानवरों की तथा पक्षियों की एक जाति है। वे प्रकृति को मानते थे। उनका यह भी मानना था कि प्रकृति ने सभी मानवों को एक समान बनाया है। सबको एक मुँह, दो हाथ, दो पैर, दो आँखे प्रकृति द्वारा मिले है। कही कोई विभेद प्रकृति द्वारा नहीं किया गया है। कबीर दास ने भी कहा है कि :–

''पाहन पूजै हरि मिलै तो मै पूलूँ पहाड़।
ताते यह चक्की भली, जो पीस खाए संसार।''

निर्जीव पत्थर पूजने, उसके सामने धूप–गंध जलाने से क्या होगा। अर्थात दलितों असहायों एवं गरीबों की सेवा की जाय जो सबसे बेहतर पूजा है। पत्थर के बने देवी–देवताओं के आगे जीवों की हत्या कर पुज्य कमना कहाँ तक साथर्क एवं न्याय संगत है? तथागत अंहिसा में विश्वास करते थे। उनका उपदेश था चोरी मत करो, जीवों का हिंसा मत करो, दूसरो की सम्पति को ढेले के समान समझो, परस्त्री को माँ–बहन के समान समझो, बड़े–बुजुर्गो की सेवा करो, सबका आदर करो, यही मानवता है, सही समाजवादी विचारधारा है। समाजवाद विश्ववि के समस्त दलितो एवं शोषितों को एक ध्वज के नीचे संगठित देखना चाहता है जिसके शोषक वर्ग सदा के लिए इस पृथ्वी से समाप्त हो जाए और इस प्रकार के वर्गविहीन समाजवाद की स्थापना हो बुद्ध के उपदेशों से यही शिक्षा मिलती है दलितें पीड़ितों एवं गरीबों की भालाई करो, शीलवान बनो, सदाचारी बनो, तथा ईमानदारी से सबो का विकास करो।

भगवान बुद्ध एकता प्रिय थे, एकता में विश्वास करते थे। एकता पर हमेशा जोर देते थे। महापरिनिर्वाण सूत्त जो बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। जिसमें तथागलत द्वारा एकता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। एक बार वे वैशाली (मुजफ्फरपुर) में बिहार कर रहे थे तो राजगृह के राजा आजात शत्रु वैशाली में रहने वाले दलितों (मल्ल, भील, बज्जियों) पर चढ़ाई करने के उद्देश्य से बस्सकार नामक ब्राह्मण मंत्री को भेजा कि जाओ बज्जी लोगों से कहो कि राजा आजातशत्रु आप लोगों पर आक्रमण करना चाहते है। मंत्री बस्सकार ब्राह्मण ने वहाँ विहार कर रहे सम्यक् सम्बुद्ध से भेंटकर कहा कि आजाशत्रु बज्जियों पर आक्रण करना चाहते है। इस पर आपका क्या विचार है? भगवान बुद्ध ने स्पष्ट शब्दो में कहा कि बज्जी लोग एकता प्रिय है कोई भी कार्य बैठक में निर्णय के बाद करते है, शीलवान है, सदाचारी है, परिवार में बृद्धों–बुजुर्गो की सेवा करते है, कर्मठ है, ईमानदार है। ये सारे गुण तब तक उनें विद्यमान रगें तब तक कोठ उनपर आक्रमण नहीं कर सकता है। अन्त में वैशाली के दलित समाज के लोग जो मल्ल, भील, बज्जी के रूप में जाने जाते है उनपर आक्रमण करने के इरादे को अचानक आजातशत्रु को बदलना पड़ा आक्रमण करने के निर्णय को विराम देना पड़ा।

भगवान बुद्ध मध्यमार्गी थे। उनको बोधि वृक्ष क नीचे जो ज्ञान–लाभ हुआ था, उसे मध्यम मार्ग के नाम से जाना जाता है उसे पालि भाषा में ''दुक्ख निरोध गामिनी मज्झिमा पटिपदा'' के नाम से जाना जाता है। इसे 'अरियो अठडिगको मग्गो' भी कहा जाता है। जिसका भाव होता है बीच का रास्ता अथवा मध्यम मार्ग। मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में चाहे, वह समाजिक हो, राजनीतिक हो, आर्थिक हो, बीच का रास्ता अपनाना चाहिए। ऐसा करने पर सुख एवं शान्ति की प्राप्ति हो जाती है। मुक्त अथवा मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है जिसका पालि भाषा में ''निब्बन'' निर्वाण की प्राप्त कहा जाता है।

''निब्बान शब्द का शाब्लिक अर्थ होता है निःवाण। निः का अर्थ होता है निषेध तथा वाण का अर्थ होता है तृष्णा (लोभ) अर्थात तृष्णा का विषेध । तृष्णा का सभी दुखो का कारण है। यह तीन तरह का हेाता है। काम तृष्णा भव तृष्णा तथा विभाव तृष्णा जब मानव इन तीणों तृष्णा को त्याग देता है उसे 'परम निर्वाण, की प्राप्ति हो जाती है वह जन्म, जरा, बुढापा एवं मरने जेसे दुःखो से मुक्त हो जाता है।

भगवान बुद्ध ने मानवीय दुखों एवं पीड़ओं को बहुत नजदीक से देखा है। ज्ञान प्राप्ति के बाद अनेक विद्वानो उनके पास आये अपनी अपनी भाषा में उनसे उपदेश देने का आग्रह किया लेकिन उन्होने साफ शब्दो में कह दिया कि मैं विद्वानों की भाषा में अपना उपदेश किसी भी कीमत पर नही दूँगा। क्योंकि ऐसा करने पर मेरा उपदेश विद्वानो तक सिमट कर रह जायेगा और इसका स्वरूप विद्वतजन बदल दगें। ऐसा मुझे शंका है अतः मैं अपना उपदेश उस भाषा में देना चाहूँगा जिस भाषा को दलित अनपढ़, गँवार, शुद्र भेड़ चराने वाले, बकरी चराने वाले, चूहा मारनेवालो, साँप पकडने वाले, खेत जोड़ने वाले मजदूर सब लोग जानते है, बोलते है एवं समझते है, बुद्ध के समय जन जन की भाषा ''पालि'' थी। वही मागधी का अपभ्रंश रूप था।

बीसवी शत्बाब्दी में फिर एकबार दलितें पीड़ितो दुखियों तथा प्रताड़ितों महिलाओं की आवाज को डा० भीमराव अम्बेदकर ने डंके की चोट पर बुलन्द किया। डॉ० अम्बेदकर साहब हिन्दू धर्म के भीतर रहकर उसकी कुरीतियाँ, असामनता विषमता, वर्ण व्यवस्था, छुत–अछूत आदि का विरोध करते हुए समाज में बराबरी लाने तथा आपसी भाई–चारा लाने को पुरजोर प्रयास किया किन्तु सवर्ण हिन्दू समाज किसी भी परिस्थिति में दलित वर्ग को सदियों को दास्ता से मुक्त करने एवं समान अधिकार देने को तैयार नही थे। ऐसा देखकर 1935 में (येवला) के एक विशाल सभा में उन्होने घोषणा की मैं हिन्दू में पैदा हुआ हूँ लेकिन हिन्दू के रूप में मरूंगा नहीं। एसा कहते हुए हिन्दू धर्म का परित्याग कर बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये।

डॉ० अम्बेदकर पर बुद्ध के दर्शन की गहरी छाप थी। उनके विचारो का समर्थन करते हुए अम्बेदकर साहब ने समाज में फैली कुरीतियो, रूढ़िवादिता, वर्णव्यवस्था, जातिवाद, शोषण–दोहन एवं अस्पृश्यता के विरूद्ध बौद्ध धर्म को एक अस्त्र के रूप में समाज में पेश किया तथा आवाज दी कि तथागत के अन्तिम वचन अप्प दीपो भवो को आधार बनाते हुए दलित वर्ग को आह्वान किया कि दलित भी अपने अधिकार पाने के लिए स्वंय को त्यार करें। शिक्षित बने और आगें बढने का संकल्प लें (अपना अधिकार केवल माँगने से नही मिलता है अपना अधिकार एवं सम्मान लेना पड़ता है। इसके लिए सघर्ष करना पड़ता है। कुर्बानी देन चाहती है त्याग करना पड़ता है। अपन ज्ञान (बुद्धि) की शरण मेंजाने का प्रयास करं तथा वर्णव्यवस्थ नाम पर सापे गऐ अत्याचार का मुकाबला करे। ये सभी तभी सम्भव है, जब दलित, शोषित लोग बौद्ध धर्म को स्वीार करे तथा उनके बताए हुए मार्गो पर चले। डॉ० अम्बेदकर साहब ने बुद्ध को अब तक का सबसे बड़ा क्रान्तिकारी बताया तथा कहा कि बौद्ध धर्म एक धार्मिक क्रांन्ति थी, जिसका तुलना फ्रांस की क्रान्ति से किया जाना उचित होगा। इस क्रान्ति ने आगे चलकर सामाजिक एवं राजननीतिक क्रान्ति के रूप से लिया।

डॉ० अम्बेदकर साहब बौद्ध धर्म को अछूतों का मूल धर्म चालते है। उनके इस त ने दलितों एवं बौद्ध धर्म के बीच एक भाव्यात्मक सम्ब्न्ध जोड़ दिया जिसने दलितों के द्वारा बौद्ध दलित अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इतना ही नहीं अम्बेदकर साहब ने जोर देकर कहा धर्म एक सच्चा धर्म है और सच्चे धर्म का कभी ततन नही होता है। बुर्द्ध धर्म का मौलिंक सिद्धान्त है, सामाजिक समानता। उन्होने दलितों को ललकारते हुए आवाज दी कि निर्भिक होकर बौद्ध धर्म स्वीकार करो, अनुयायी बनो शिक्षित बनो और आगे बढ़ों। सफलता निश्चित है दलितें के उत्थान का बुद्ध मार्ग ही एक मात्र मार्ग है सिज मध्यम मार्ग के रूप में जाना चाताता है। अर्थात बीचका रास्ता । इस पवित्र मार्गपर चलकर जिसे माध्यम मार्ग के रूप में जाना जाता है। अर्थात बीच का रास्ता। इस पवित्र मार्ग है जिसे मध्यम मार्ग के रूप में जाना जाता है। अर्थात् बीच का रास्ता। इस पवित्र मार्ग पर चलकर दलितों का उत्थान सम्भव है तथा समाज में सामाजिक समानता आर्थिक समानता, राजनीतिक समानता अथवा बराबरी का हक हासिल किया जाता सकता है। दलितों को शिक्षित करने के लिए निःशुल्क शिक्षण संस्थान खोलने की नेक सलाह डॉ० अम्बेदकर साहब ने दी थी। इतना ही नहीं उन्होने कई संस्थान खुलवाए भी जैसे मुम्बई में सिद्धार्थ कॉलेज, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में मिलिन्दा कॉलेज इत्यादि।

उनको शिक्षा करनी होगी तथा अलग से सुविधाएँ प्रदान करनी होगी। तभी दलितों का उत्थान होगा।

आगे मुझे कहना है कि दलितों का उत्थान हिन्दुस्तान में बहुत पहले ही गया रहता, लेकिन दुर्गाग्यवश मुहम्मद खिलजी का आक्रमण भयंकर रूप से बाधक हुआ। हिन्दुस्तानियों को कमजोर करने के उद्देश्य से या यो कहें कि भारतीय संस्कृति एवं कला को कमजोर करने के उद्देश्य से प्राचीन शिक्षा केन्द्र 'नालन्दा विश्वविद्यालय' में आग लगा दी गयी। जहाँ विदेश से छात्र–छात्राएँ ओकर अध्ययन करते थे। पुस्तकालय में रखे गये अधिकाशं ग्राथ जल गये । कुछ चतुर बौद्ध भिक्षु एवं धर्मावलम्बी कुछ पुस्तको एवं ग्रन्थो को घोड़े तथा खचरो पर लादकर दूसरे देश में ले गये तथा शरण ली। अंग्रेजो का भारत में आना और भातरी को गुलाम बनाना भी दलितों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण रहा। अंग्रेज ने भी यहाँ के सस्कृति एवं कला को न्ष्ट करने का काफी प्रयास किया। जिसके कारण दलितों का उत्थान बाधित रहा।

बींसवी सदी में आचार्य नागार्जुन बाबा भीव राव अम्बेदकर तथा राहुल सांकृत्यायन का अभिर्भाव हुआ, जिनके अथक प्रयास से फिर दलितों का उत्थान हुआ, पहचान हुई और आज 21वी संदी में दलितों के उत्थान की गति काफी तीव्र हुई है तथा उम्मीद जगी है कि दलितो का उत्थान बहुत शीघ्र अन्तिम पायदान पर पहुँचने वाला है। इसे लिए सरकार तथा भारत की जनता काफी जागरूक है। दलितों की पहचान बनी है। उत्थान जारी है लक्ष्य की प्राप्ति यथाशीघ्र हो जायेगी।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची :

1. बसलसुत्त– सुतनिपात।
2. बासेठ सुत्त–मज्झिम निकाय।
3. हम बौद्ध क्यों बने – डॉ० भीमराव अम्बेदर पृ० 26, 23, 16, 31
4. डॉ० भीमराव अम्बेदकर – एक मूल्यांकन केवल भारती पृष्ठ 119, 60
5. कबीर के दोहे–''पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजू पहाड़। ताते यह चक्की, भलि, जो पीस खाए संसार''
6. अलगददूपम सुत्त – मज्झिम निकाय।